जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 12 अगस्त 2020

जामिया शिक्षकों का शोध लेख टेराग्रीन की कवर स्टोरी बना

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की फैकल्टी के सदस्यों का एक शोध लेख, दुनिया की जानी-मानी पत्रिका, टेराग्रीन में कवर स्टोरी के रूप में छपा है। इस शोध पत्र का शीर्षक है "कोविड-19 महामारी का पर्यावरण और सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता पर प्रभाव "। यह टीईआरआई की पत्रिका है, जिसका दुनिया भर में सामाजिक प्रभाव है।

यह पत्रिका पिछले 14 वर्षों से विकास और पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में दुनिया भर के पाठकों को अपने गहरे विश्लेषणों के साथ जमीनी हकीकत से परिचय कराती है।

इस शोध लेख के लेखक डॉ सबा नूर, डॉ शमा परवीन और प्रोफेसर शेर अली हैं, जो जामिया के सेंटर फॉर इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च इन बेसिक साइंसेज (सीआईआरबीएससी) से जुड़े हैं।

डॉ नूर रिसर्च एसोसिएट हैं, डॉ परवीन एसोसिएट प्रोफेसर हैं, जो कोरोनोवायरस, डेंगू, चिकनगुनिया, जीका और श्वसन सिंक्रोटीलियल वायरस आदि के आणविक जीव विज्ञान पर काम कर रही हैं। प्रोफेसर शेर अली तुलनात्मक जीनोमिक्स और मानव स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों से संबंधित शोध से जुड़े हैं।

कोविड-19 महामारी से उपजी लाकडाउन जैसे स्थिति समाज के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। इस महामारी ने सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया है।
इस शोधपत्र में इन गंभीर तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह मनुष्यों ने प्रकृति पर अभूतपूर्व अत्याचार करके, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई की , जल निकायों को प्रदूषित किया, बसावटों का विनाश किया और पृथ्वी के संसाधनों का अति शोषण किया है। हालांकि इसमें यह भी कहा गया है कि अभी भी बहुत देर नहीं हुई और अगर मानव जाति सुधारात्मक कदम उठाना शुरू करे तो वातावरण को बचाया जा सकता है।

लेख में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बिना किसी शर्त के हमें पर्यावारण और वातावरण बचाने के लिए, मिल कर ठोस कदम उठाने चाहिए। साथ ही, अभी हमें कोविड-19 महामारी के

नतीजों को सामना करते हुए हमें अपने समाज, अपने देश और विश्व के पुनर्निर्माण में जुटना जाना चाहिए।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक